4.

"सबके साथ सबका विकास"

दुनिया में कई तरह का लोग है। वह अलग अलग परिवार के हिस्सा होके भी, अलग तरह में दुनिया को देखके भी साथ इस संसार में रहते है, कुछ लोग एक ही काम करते है। एक साथ बिना किसी भाव-भेद से। इस विचार उनको आगे ले जाते है। अगर कुछ काम सब एक साथ करें तो सब कुछ आसान ही नहीं बल्की अच्छा भी हो जाता है। इस काम में अगर विजय प्राप्त करना हो तो हमें मन से जाती, रंग, देश, वर्ग, धन, स्थान आदी बातों को हटाके 'इंसानियत' को अपनाना होगा। तब ही फलाई होगी सबकी और खुशी रहेगी हर दिलों में।

हम भारतीयों का प्रतिज्ञा यह है कि 'हम एक है।' हमारी देश में करोडों लोग जीते है। उनकी सोच अलग है, संस्कार अलग है, परंपरा अलग है जीवन की रास्ता भी बहुत अलग है। लेकिन, हम एक है क्योंकि हम १ भारत के निवासी है। भारत माता हम सबकी माँ है। इस सोच ही हमें एकता में लाएगी।

अगर सब साथ साथ कोशिश करें तो एक पहाड़ को भी उड़ा सकते हैं। मतलब एकता का एहसास अगर हर मन में हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। - सब कुछ हम कर सकते हैं। अगर किसी शख्स को एकता सीखना है तो वो जाके ही चींटियों के पास जाएँ। उनकी एकता देखके हम समझ सकते हैं कि जो हम हमारी सहजीवियों के साथ कर रहे हैं, क्या वो सही है या गलत। एक चींटी को अगर खाना मिल जाए तो वह अपना साथियों को भी बुलाता है। और मिली हुई खाना सबके साथ बाँटता है। यही तो एकता का असली मतलब है। हर हमारी मन में अपना अपना विचार नहीं बल्की दूसरों का भी विचार होना चाहिए। दूसरे हमें होगा। जब ऐसे करते हैं तो तब उनकी मन में हमारे लिए प्यार और सम्मान, बहुमान होगा। इस सोच हमारे बीच एकता का एहसास दिलाएगी।

जब हम सबके साथ ऐसे प्यार का और एकता का व्यवहार करेंगे तो समूह में एकता बढ़ेगा। वे समूह में एक साथ अच्छा काम करने की प्रेरणा हमें देगी। ऐसे हमारी समाज और समूह उन्नतियों में पहुँच जाएगी। एकता के साथ, एकता की रास्ते में चलनेवाली देश बहुत कुछ अच्छा कर पाएगी। हमारी देश ~~भी~~ इस संसार की बड़े और प्राप्त देशों के साथ ~~छि~~ गिन जाएगा।

पहले बताए हुए बातों का अटिस्तान तथ मूलकारण होना चाहिए हमारा सोच। अगर हमारी सोच अच्छा हो तो सब कुछ अच्छा है। हम कुछ करने केलिए सोचते हैं, इसलिए तो कुछ करते हैं। किए हुए काम भलाई का हो तो बहुत अच्छा है। लोग हमें देखकर पढ़ेंगे, हम जैसे अच्छाईओं करने लगेंगे; तब हमारे साथ काम करेंगे सबकी भलाई केलिए। तब देश-समूह विकास को प्राप्त करेगा। हर दिलों मे इंसानियत, प्यार, और करुणा भी बढ़कने लगेगी। यही तो एक इंसान की जन्म का उद्देश्य है।

हमारा देश विकास को प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन समूह की कुछ कोनों में आज भी असमता की सूखी हवा चलती है। जाती, रंग, देश, परिवार, परंपरा आदी के नाम पर आज भी लोगों को अपनी अवकाशों निषेध की जाती है - और उन्हें सब कुछ सहकर गरीब और कष्ट का ज़िन्दगी जीना पड़ रहा है। यह समस्याएँ ही समूह में अनेक गलत करनेवालों को बनाता है। क्योंकि उन्हें जीने केलिए कोई दूसरा रास्ता नहीं पता। और अच्छी तरह जीने की क्षमता और योग्यता होके भी उनको ऐसे जीने की अनुमति नहीं देते हैं। इन्हें सबसे बुरा और नीच समूह माना जाता है। वो लोग जो ज़ुबान से कहते हैं कि हम सबसे ऊँच हैं और असल में दिल से और दिमाग से सबसे छोटे हैं।

ऐसे, कुछ लोगों का सोच बहुत सी लोगों का जीवन तबाह कर देता है। उनकी सपनों को बढ़ने से पहले ही तोड़ देती है।

ऊँच-नीच का भाव ~~के~~ भेद नहीं, बल्कि हर मन में, हर दिल में, हर इंसान में एकता का, समता का, प्यार का और करुणा का मनोभाव और विकार होने की ज़रूरत है।

असमता के कारण समूह से दूर ~~का~~ भगाए हुए एक जनता है हाशिए पर लगे लोग। उनकी ज़िन्दगी बहुत कड़वा है क्योंकि ~~स~~ समाज के बड़े बड़े लोगों ने अपने बल से और अधिकार से उनकी अवकाशों ~~को~~ ~~प~~ का निषेध करके, नियमों का उल्लंघन करके ~~स~~ सब कुछ अपनाता है। यह समस्या जानते हुए भी कोई भी आज तक आवाज़ नहीं उठाया है। क्यों? क्योंकि सब जानते हैं कि ~~अ~~ अगर उनके प्रति कुछ बोला तो गर्दन के ऊपर सिर नहीं होगा। ~~जो~~ ~~लोग~~ लेकिन कुछ लोग इस कठिन और कूरी समस्या के प्रति आवाज़ ~~उ~~ उठाया लेकिन वे आज नहीं रहे। यह सबका मूल कारण असमता और लोगों के बीच एकता का न होना ही है। ~~य~~ यह बात सही है या गलत? खुद पूछके देखिए। अगर हर एक व्यक्ति समूह में सारी इन समस्याओं के प्रति ~~आवाज़~~ ~~उठाकर~~ एक

ू ।

साथ आवाज़ ~~उठाके~~ उठाके देखें, तब से यहाँ, कहीं भी कुछ भी बुरा नहीं होगा।

~~अंधेरे~~ अंधेरे में हमें अक्सर डर लगता है। लेकिन अगर हमारे साथ कोई हमें ~~एक~~ रोशनी दिखाने केलिए हो तो हमें उतना डर नहीं लगेगा ~~जितना~~ जितना हम ~~अकेले~~ होने पर महसूस करते हैं। और अगर हमारे साथ बहुत सारे लोग हो तो हम बिना डर के आगे बढ़ सकते हैं। चाहे ~~वो~~ हम जितना भी कठिन अंधेरे के बीच ~~क्यू~~ क्यों न हो। ~~वैसे~~ ही अगर हमारे साथ ~~...~~ खड़ा होने केलिए, ~~...~~ संसार की-समाज की असमताओं के साथ लड़ने केलिए ~~बहुत~~ सब लोग हो तो हम सब कुछ आसानी से कर पाएँगे। इसकेलिए एकता का एहसास होने की ज़रूरत ही है।

जब सब एक साथ ~~...~~ असमता को फैलानेवाले बातों को, समस्याओं को समाज से हटाएगा, या उनका नाश कर देगा, तब ही उन्नती होने लगेगी। तब ही ~~हमारे और हो~~ हमारा देश का विकास होगा।

4

'एक इंसान' ~~से~~ परमेश्वर का सबसे श्रेष्ठ सृष्टि है। उन्होंने इंसानों को सब कुछ करने की क्षमता दिया है। ~~एक साथ~~ अच्छी बातें सोचने के लिए मन और करने के लिए शरीर सब कुछ। ~~लेकिन~~ इंसान बहुत कुछ करते हैं। लेकिन एकता का विचार से नहीं। वह सोचता है कि अपने लिए क्या करें? अपना परिवार के लिए क्या करें? और धन बढ़ाएँ कैसे? लेकिन ~~वह~~ यह सोचते समय हमारे देश की हालत के बारे में नहीं सोचती है। भूख और प्यास से रोनेवाले बच्चों का, बीमारी से दर्द सहनेवालों का, और जाने के लिए कोई ~~जगह~~ जगह भी नहीं उनका हालत वह नहीं समझता या सोचता। अगर इस तरह -इसी रास्ते में सोच ~~वह~~ बदलेगा तो ही ~~मन~~ काम भी बदलेगा। ऐसी एक ~~बदलाव~~ ~~बद~~ बदलाव ही ~~हर~~ हर मन में करुणा ~~की~~ बनाएगी जो समता की रास्ता दिखाएगी। ~~नरेश सक्स सक्सेना ने~~ विनोद कुमार शुक्ला ने अपनी कविता पर कहा है कि 'दो मनुष्यों के बीच मानवीय मूल्यों का, या मानविकता का एहसास होना ज़रूरी है। जानकारियाँ ज़रूरी नहीं है'।

जब दो लोग एक तरह सोचेंगे तब ही एक साथ काम करेंगे। इसकेलिए पहले हमें सबकी दिलों में एकता का एहसास दिलाना होगा। उसके बाद जब सबको एक एहसास आएगा कि हम एक हैं, हमें एक साथ काम करना चाहिए - तब हमा अपने आप समूह की उन्नती: केलिए कुछ करने लगेंगे। वैसे जब हर लोग करने लगेंगे तो हम विकास प्राप्त करने लगेंगे। फिर समाज की उन्नती के साथ-साथ हर शख्स का भी उन्नती होगी। प्यार का और एकता का रास्ते पर चलनेवालों का कभी हार नहीं होती। 'बईबिल' इस बात की एक सच्चा उदाहरण है।

एकता का मार्ग ही हमें आज़ाद किया। उस रास्ते ने हमें स्वतंत्रता दिलाई। इस भारत के आम जनते से लेकर बड़े बड़े लोग भी एक साथ भाषा, देश, रंग, जाती, वर्ग आदी को देखके बिना एक साथ हमारी आज़ादी के-लिए लड़ा। उनकी एकता का मीठा फल है वही है जो हमें 15 अगस्त 1949 को मिला। अगर एक साथ रहो, और एक साथ बढ़ो तो सब कुछ हो सकता है - इस बात का इससे बड़ा उदाहरण कुछ और नहीं है।

4

'रहो एक साथ, करो सब एक साथ, लड़ो एक साथ, तब मिलेगा विजय', तब प्राप्त होगा विकास।' इस मंत्र को मन में रखकर इस कदन की मतलब समझकर अगर ~~क~~ ~~अ~~ अच्छाई करोगे तो सबको होगा भलाई। इंसान को इंसान की तरह देखना चाहिए। दूसरों को हमारी अपना समझना चाहिए। तब समाज ही नहीं पूरी दुनिया में अच्छाई होगी। बुराई का नाम और निशान भी मिट जाएगी। तब आसमान में एकता का रोशनी, ~~з~~ ज़मीन पर प्यार की हरियाली और हर दिलों में करुणा और समता का डंका भी होगा।

जय हिंद